अर्धमागधी आगम साहित्य

आचारांग -

इकाई - 1 उपधानश्रुत नवम अध्ययन

Q.1 उपधानश्रुत में नवम अध्ययन का आचारांग सूत्र का विवेचन करें।

Ans- उपधानश्रुत में नवम अध्ययन का आचारांगसूत्र का विवेचन इस प्रकार है।

(1) आचारांग सूत्र के नवम अध्ययन का नाम उपधान श्रुत है।

(11) उपधान का सामान्य अर्थ होता है शय्या आदि पर सुख से सोने के लिए सिर के नीचे - सहारे के लिए रखा जानेवाला साधन - तकिया प्रस्तुत यह द्रव्य उपधान है।

(111) भाव - उपधान ज्ञान दर्शन, चरित्र और तप है।

जिससे चरित्र परिणत भाव को सुरक्षित रखने के लिए सहारा मिलता है इनसे साधक को अनन्त सुख-शान्ति एवं आनन्द की अनुभूति होती है, इसलिए ये ही साधक के शाश्वत सुखदायक उपधान है।

(1v) उपधान का अर्थ उपधमनशील किया जा सकता है। जैसे मालिन वस्त्र जल से धोकर शुद्ध किया जाता है वहाँ जल आदि द्रव्य-द्रव्य उपधान होते है, वैसे ही आत्म पर लगे हुए कर्म मैल बाह्य - आभ्यन्तर तप से धुल जाते - नष्ट हो जाते है आत्म शुद्ध हो जाती है अतः कर्म मलिनता को दूर करने के लिए यहाँ भाव-उपधान का आर्यपत है

(v) उपधान के साथ श्रुत शब्द जुड़ा हुआ है जिसका अर्थ होता है सुना हुआ इसलिए 'उपधान-श्रुत' अध्ययन का विशेष अर्थ हुआ - जिसमें दीक्षितपूर्वा भगवान महावीर के तपोनिष्ठ ज्ञान, दर्शन, चारित्र साधनारूप उपधानमय जीवन का उनके श्रीमुख से सुना हुआ वर्णन हो।

(vi) इसके अलावा इसमें भगवान महावीर की दीक्षा से लेकर निर्वाण तक की मुख्य जीवन - घटनायें उल्लेख है भगवान ने यो साधना की वीतराग हुए धर्मोपदेश दिये और अन्तमें 'अभिनिव्वुडे' अर्थात निर्वाण प्राप्त किया उन्हें पढ़ते समय ऐसा लगता है कि आर्य सुधर्मा ने भगवान महावीर के साधना - काल की प्रत्यक्ष तपस्वी तस्वीर प्रस्तुत की है।

(vii) इस अध्ययन के चार उद्देशक है, चारों में भगवान के तपोनिष्ठ जीवन की झलक है।

(viii) प्रथम उद्देशक मे भगवान की चर्या का द्वितीय उद्देशक मे इनकी शय्या का तृतीय उद्देशक मे भगवान द्वारा सहे गये परीषह-उपसर्गों का और चतुर्थ उद्देशक मे क्षुधा आदि से आतंकित होने पर इनकी चिकित्सा का वर्णन है।

(ix) अध्ययन का उद्देश्य - पूर्वोक्त आठ अध्ययनों मे प्रतिपादित साधनाचार विषयक साधना कोरी कल्पना ही नहीं है इसके प्रत्येक अंग को भगवान ने अपने जीवन मे आचारित किया था ऐसा दृढ़ विश्वास प्रत्येक साधक के हृदय मे जाग्रत हो और वह अपनी साधना निष्ठा व निश्चलभाव के साथ कर सके यह प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है।